मई 2024, अंक 7

# सिनेमाहौल

## फ़िल्म ईज़ीन

संकलन और संपादन

अजय ब्रह्मात्मज

# साहित्य सिनेमा और हीरामंडी...

आवरण: आर वर्क

- जवरीमल्ल पारख
- रवीन्द्र त्रिपाठी
- दिलीप कुमार पाठक
- डॉ. चंद्रप्रकाश द्विवेदी
- गीता श्री
- डॉ. वर्षा कोस्टा
- कानन देवी
- अवशेष चौहान
- मनोरमा सिंह
- मोनिका गढ़वाल
- निर्देश निधि
- डॉ. रक्षा गीता
- राकेश कुमार त्रिपाठी
- रविराज पटेल
- रश्मि रविजा
- सूर्यन मौर्य
- सैयद एस तौहीद
- ताराचंद बड़जात्या
- विवेक रंजन सिंह
- सरला माहेश्वरी
- डॉ. सुप्रिया पाठक
- कविता
- पूरन जोशी
- राजीव सक्सेना
- निष्ठा सक्सेना
- सौम्या अपराजिता
- सृष्टि उपाध्याय
- अमित राय
- साधना अग्रवाल

*मई, 2024*

*अंक 7*

# सिनेमाहौल

फ़िल्म ईज़ीन

## संकलन और संपादन:

## अजय ब्रह्मात्मज

# अनुक्रम


मेरी बात 5

ताकि सनद रहे 8

**साहित्य और सिनेमा**

पन्ने से परदे तक: कहानी पिंजर और मोहल्ला अस्सी की 19

*डॉ. चंद्रप्रकाश द्विवेदी*

साहित्य की सीधी-सादी रेसिपी: पंचलाइट की पटकथा 40

*राकेश कुमार त्रिपाठी*

साहित्य पर आधारित फ़िल्में: दो बैलों की कथा एवं फिल्म ‘हीरा मोती’ 53

*सैयद एस तौहीद*

चित्रलेखा उपन्यास पर बनी फिल्म चित्रलेखा 61

*गीताश्री*

कोहबर की शर्त 71

*रश्मि रविजा*

गाइड: जीवन से मूल्यवान है प्रेम और विश्वास 77

*निर्देश निधि*

मन के अंतर्द्वंद्वों की तह में जाती '1084 की मां' 93

*विवेक रंजन सिंह*

सूरज का सातवाँ घोड़ा 100

*दिलीप कुमार पाठक*

रूई का बोझ 105

*सैयद एस तौहीद*

साहित्यिक कृतियों पर बनी अपराध कथाएं 110

*अवशेष चौहान*

साहित्य और सिनेमा: संबंध के विचार बिंदु 117

*सृष्टि उपाध्याय*

साहित्य और सिनेमा 123

*मनोरमा सिंह*

शेक्स्पेरियन ट्रेजडी और विशाल भरद्वाज की ट्राइलॉजी 131

*मोनिका गढ़वाल*

साहित्य, सिनेमा, कला और तकनीक 136

*रविराज पटेल*

साहित्य, सिनेमा और साहित्यकार 142

*सूर्यन मौर्य*

साहित्य के झरोखे से सिनेमा दर्शन 146

*डॉ रक्षा गीता*

**पुस्तक का अंश**

साहित्य कला और सिनेमा : अंतःसंबंधों की पड़ताल 160

*जवरीमल्ल पारख*

मैं जया.. 176

*रवीन्द्र त्रिपाठी*

लापता लेडीज! 180

*सरला माहेश्वरी*

हीरामंडी : सुबहे आज़ादी के ख्वाब का परचम लहराती औरतें 183

*डॉ. सुप्रिया पाठक*

हीरामंडी : द डायमंड बाजार 192

*अमित राय*

हीरामंडी: वो उन्वाने-तर्जो-रकम देखते हैं 198

*कविता*

हीरा मंडी 203

*साधना अग्रवाल*

हीरामंडी 206

*पूरन जोशी*

हीरामंडी 212

*राजीव सक्सेना*

भंसाली की हीरामंडी 216

*निष्ठा सक्सेना*

हीरामंडी 219

*डॉ. वर्षा कोस्टा*

**दादा साहेब फाल्के पुरस्कार**

बहुमुखी प्रतिभा की धनी : कानन देवी (1976) 222

*सौम्या अपराजिता*

# मेरी बात

आपके स्क्रीन पर सिनेमाहौल फ़िल्म ईज़ीन का सातवां अंक दिख रहा है। सात अंकों की यह यात्रा आशा-निराशा के दो किनारों के बीच कभी वेग तो कभी क्षिप्र गति से चलती रही। हर बार आवरण विषय चुनना और फिर संभावित लेखकों से आग्रह करना मुझे निरंतर विनम्र और सहनशील बना रहा है। फिर भी अभी तक के मेरे अनुभव में किसी भी लेखक या कंट्रीब्यूटर को दो बार से अधिक नहीं कहना पड़ा है। हां, अधिकांश अंतिम तारीख 25 या उससे दो-तीन दिन पहले ही सामग्री भेज पाते हैं। कोई बात नही। थोड़ी देर हो भी जाती है, लेकिन हमारी पूरी कोशिश रहती है कि महीना समाप्त होने के पहले अंक आ जाए। नीलाभ और गरिमा अपनी टीम के साथ मेरे इस संकल्प को समय पर पूरा कर देते हैं।

इस बार का आवरण विषय 'साहित्य और सिनेमा' एवं 'हीरा मंडी' है। आवरण विषय के बारे में कुछ मित्रों की आरंभिक राय थी कि यह घिसा-पिटा विषय है। इस पर रोचक सामग्रियाँ नहीं मिल पाएंगी। उन्हें मैंने यही कहा कि कोशिश करते हैं। और इस कोशिश में हमें 17 लेखकों के आर्टिकल मिले। कुछ लेख उत्कृष्ट हैं और कुछ साधारण हैं। अगर हर लेखक दूसरे-तीसरे लेखक को पढ़ेगा तो स्वयं उत्कृष्ट और साधारण की पहचान कर लेगा। वे आत्म विवेचना भी कर सकेंगे। मैं तो यही चाहता हूं कि सिनेमा पर लिखने वालों की संख्या और सक्रियता बढ़े। उनके लिए नए प्लेटफार्म हों, जहां उन्हें आसानी से खोजा

और पढ़ा जा सके। इसलिए लेखकों से मेरा आग्रह है कि सोशल मीडिया पर कुछ भी लिखने और बताने के साथ वे उसे थोड़ा विस्तार कर मेरे पास भेज दिया करें।

इस अंक में डॉ. चंद्र प्रकाश द्विवेदी ने अपनी फिल्मों 'पिंजर' और 'मोहल्ला अस्सी' की पटकथा के संबंध में विस्तार से लिखा है। उन्होंने मूल कृतियों से क्या लिया और क्या छोड़ा? उनके बारे में विस्तार से बताया है और उसके कारण भी बताए हैं। साहित्य और सिनेमा के संबंधों का अध्ययन कर रहे शोधार्थियों और अध्यापकों को इससे लाभ होगा। उन्होंने अमृता प्रीतम और काशीनाथ सिंह के लेखन की विशेषताओं के बारे में भी कुछ लिखा है।

युवा लेखक राकेश कुमार त्रिपाठी ने फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी 'पंचलाइट' के पटकथा रूपांतरण की विशद प्रक्रिया के बारे में विस्तार से सब कुछ बताया है। साहित्यिक कृतियों की पटकथा लिखना और मूल कृतियों के मर्म और सार को बचाए रखना बड़ी चुनौती होती है। मैं दोनों लेखकों का आभारी हूं।

जवरीमल्ल पारख ने अपनी पुस्तक 'साहित्य कला और सिनेमा: अंत:संबंधों की पड़ताल' का एक अंश प्रकाशित करने की अनुमति दी। पुस्तक की भूमिका के रूप में उन्होंने उनके संबंधों की पीठिका दी है। पूरी किताब पठनीय और संग्रहणीय है। अध्येताओं और अभ्यासकर्ताओं के लिए यह पुस्तक समान रूप से उपयोगी है।

अन्य लेखकों ने 'साहित्य और सिनेमा' के संबंधों की जटिलताओं, विशेषताओं और समस्याओं के बारे में लिखा है। इन लेखों से इनके संबंधों को समझने की एक दृष्टि

मिलती है। कुछ लेखकों ने किसी खास फिल्म के बारे में लिखा है। दोनों ही प्रकार के लेखों से साहित्य और सिनेमा के संबंधों के विभिन्न आयाम प्रकट हुए हैं।

इस बार कुछ नए लेखक जुड़े हैं। उन सभी का स्वागत है।

पिछले महीने 'हीरा मंडी' ओटीटी प्लेटफॉर्म पर आई थी तो सुधि दर्शकों ने उसे देखने के बाद अपनी प्रतिक्रियाएं सोशल मीडिया पर शेयर कीं मैंने उनसे अनुमति और सहमति लेकर उन्हें संकलित किया है। मैंने लेखकों से आग्रह किया था कि वे अगर वे अपनी टिप्पणियों को विस्तार दे सकें तो अच्छा रहेगा। डॉ सुप्रिया पाठक ने विस्तार से हीरा मंडी की चर्चा की है। अन्य सभी टिप्पणियां पॉजीटिव हैं। लेखकों ने अपने नजरिया से सीरीज की खूबियों को उजागर करते ने के साथ कमियों का भी जिक्र किया है।

दिग्गज दृष्टि और दादा साहब फाल्के सम्मान के अंतर्गत स्थायी स्तंभ में आप ताराचंद बड़जात्या का लेख और कानन देवी का प्रोफाइल पढ़ पाएंगे। ताकि सनद रहे में कार्तिक आर्यन, मनोज बाजपेयी और पायल कपाड़िया के महत्व को रेखांकित किया गया है।

अपनी टिप्पणियों और प्रतिक्रियाओं से अवगत कराएं और अगले अंकों के आवरण विषय भी सुझाएं।

फिल्म देखें और फिल्म पढ़ें।

अजय ब्रह्मात्मज

मई 2024

cinemahaul@gmail.com